माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 5 अप्रैल 2016 को ई–मैक्स संस्थान समूह, कल्पी नारायणगढ रोड, अंबाला के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 कैलाश चन्द्र शर्मा जी, ई–मैक्स संस्थान समूह के चेयरमेन एवं प्रबंध निदेशक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी, मुलाना की विधायक श्रीमती संतोष चौहान जी, युनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी, कुरूक्षेत्र के निदेशक प्रो0 सुनील धींगड़ा जी, दैनिक भाष्कर के स्टेट हैड श्री दीपक धीमान जी, इस संस्थान के निदेशक मण्डल के सदस्यगण, अभिभावकगण, शिक्षकगण व स्टाफ और जिनको आज डिग्री प्रदान की गई है, उपाधि दी गई है, ऐसे मेरे प्रिय विद्यार्थियो!

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 कैलाश चन्द्र शर्मा जी ने अभी–अभी कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण किया है। मुझे लगता है कि इस क्षेत्र में उनका यह पहला ही कार्यक्रम व पहला ही संबोधन होगा। इसलिए मैं उनका आज विधिवत रूप से स्वागत करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। आप भी बड़े भाग्यशाली हैं कि पहली बार उनका आना आपके इस संस्थान में हुआ है, संस्थान समूह में हुआ है। थोड़ा मैं भी भाग्यशाली हूँ कि इस प्रतिष्ठित संस्थान के प्रथम convocation में मैं भी उपस्थित हुआ हूँ।

आज का आयोजन, जैसा कि कुलपति जी की रहे थे, वास्तव में यह किसी भी संस्था का उत्सव होता है। जिनको उपाधि दी जाती है उनके लिए भी एक बहुत मंगलमय, सुनहरा अवसर होता है जब विधिवत शिक्षा के बाद उनको सामूहिक रूप से एकत्रित करके आशीर्वाद प्रदान किया जाता है और दीक्षांत समारोह में कुछ दक्षिणा माँगी जाती है। आपके इस उत्सव में आपको उपाधि देने के लिए बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोग उपस्थित हैं। कुछ विद्यार्थी तो आप सबके लिए धूप में बैठे हैं।

आप सब यहाँ पर आए हैं, आपके मन में क्या है, किस उद्देश्य से आपने पढ़ाई की है, आपने डिग्री किस उद्देश्य से प्राप्त की है, यह तो आप जानते होंगे, लेकिन एक बात का ध्यान आपको रखने की जरूरत है कि आपकी पढ़ाई, आपकी शिक्षा सिर्फ आपके बलबूते संपन्न नहीं हुई है। यह केवल आपके पौरूष

से, पराक्रम से, आपकी मेहनत से संपन्न नहीं हुई है। यह बात ठीक है कि डिग्री आपको दी गई है। लेकिन जो डिग्री आपको प्रदान की गई इसके पीछे कई लोगों का हाथ है। सबसे पहले तो आपके परिवार का ही हाथ है। यदि परिवार के लोग आपको इतनी अच्छी पढ़ाई के लिए यहाँ तक नहीं पहुँचाते, परिश्रम नहीं करते, त्याग नहीं करते, खर्चा नहीं करते तो इतनी ऊँची पढ़ाई आप नहीं कर पाते।

विचार तो करो कि 125 करोड़ की आबादी के देश में कितने लोग हैं जो इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं? इसका जरा विचार करो। यद्यपि अपने देश में 740 युनिवर्सिटीज हैं, अढाई करोड़ विद्यार्थी उनमें पढ़ते हैं। लेकिन ये अढाई करोड़ की संख्या पूरे देश की आबादी के हिसाब से बहुत कम है। आप उन अढाई करोड़ में से एक हैं जिनको इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त हुई है। इसमें आपके परिवारों का कितना योगदान है? हमें इसका भी विचार करने की जरूरत है कि आपके मन में क्या है? आपने क्या सपने संजोए हैं? लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि आपके परिवार ने आपको इतना पढ़ाने के बाद आपके बारे में क्या सोचा है? उन्होंने क्या सपने संजोए हैं? यह कर्त्तव्य का भाव अगर मन में नहीं आता है तो इतनी बड़ी डिग्री, यह उच्च शिक्षा आपके किसी काम की नहीं है।

परिवार के बाद अगर आप विचार करेंगे तो देश का और समाज का भी कितना योगदान है? देश और समाज की बात मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इतना बड़ा परिसर किसने खड़ा किया है? यह तो समाज ने खड़ा किया है। समाज के बल पर हमारे पी0आर0 बंसल जी ने और ओमप्रकाश अग्रवाल जी ने अपने प्रयास से इतना बड़ा परिसर खड़ा किया है। इतना बड़ा परिसर खड़ा करने के बाद, आपको इतनी अच्छी शिक्षा देने के बाद वे क्या सोचते हैं, यह भी बहुत महत्वपूर्ण विषय है।

तीसरा महत्वपूर्ण विषय यह है कि कोई भी इतनी बड़ी संस्था बिना सरकार के सहयोग के नहीं चलती। सरकार का भी इसमें योगदान रहता है। यह ठीक है कि सरकार प्राईवेट संस्थानों को अनुदान नहीं देती होगी लेकिन फिर भी सरकार की बिना कृपा के, बिना सहयोग के, बिना मान्यता के, बिना सुरक्षा के कोई भी विद्यालय समाज में चल नहीं सकता। समाज तो सरकार ही होता है।

समाज से ही सरकार बनती है। सरकार समाज की एजैंसी है। इसलिए उसमें सरकार का भी बहुत बड़ा योगदान है।

इसलिए यह विचार करने की जरूरत है कि इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आपसे जो अपेक्षाएँ की गई हैं वे सारी की सारी आप पूरी करेंगे। अन्यथा कई बार हम ऐसा सोचते हैं कि शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात हम नौकरी करेंगे, नौकरी करने के पश्चात eat, drink and be marry सिद्धांत का पालन करेंगे। कई बार तो हम परिवार को ही भूल जाते हैं। माता–पिता को ही भूल जाते हैं। परिवार की परंपरा, परिवार की शान को ही भूल जाते हैं, अन्य समाज की तो बात छोड़िए। ऐसा जब समाज में होता है तो हम वह कर्त्तव्य पूरा नहीं कर रहे होते हैं जिस कर्तव्य की अपेक्षा हम जैसे पढ़े–लिखे लोगों से है।

जब मैं इस विद्यालय में, इस group of Institute में आ रहा था तो मैं देख रहा था कि ग्रामीण वातावरण के अंदर, शहर से 60–65 किलोमीटर दूर पूरे गाँव में मंगल खड़ा कर दिया है। जब इसके अंदर घुसते हैं तो इसका परिसर देखकर लगता है कि यह कमाल का परिसर है। ऐसा परिसर आपके लिए बना है तो आपका भी एक कर्त्तव्य बनता है कि डिग्री प्राप्त करके जब आप समाज में जाएँगे तो जैसा सुंदर यह परिसर है, संपूर्ण समाज और परिवार को वैसा ही सुंदर और आदर्श बनाएँगे। यह हम सबका कर्तव्य होता है।

यहाँ पर जितने भाषण हुए वे सब convocation address ही थे, वे दीक्षांत संबोधन ही थे। सब लोगों ने बहुत अच्छी बातें कही हैं। इसलिए मैं इस अवसर पर यही कहूँगा कि बस आप अंतर्मुखी होकर विचार करिए कि आप सबके माध्यम से ही देश 21वीं शताब्दी में तरक्की करेगा। पूरे विश्व और भगवान की भी नियति यह है कि भारतवर्ष पूरे विश्व में सर्वोच्च राष्ट्र बनकर उभरेगा। इसे उभारने का काम कोई अगर करेगा तो आप जैसे पढ़े–लिखे लोग करेंगे। मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएँ। संस्था के संचालकों को भी बहुत–बहुत बधाई जो इतना सुंदर काम वे कर रहे हैं। आप लोग फूलें–फलें, आगे बढें और जीवन में शान्ति से रहें।

धन्यवाद!